

# श्री भैणी साहब

प्रीतमसिंह कवि

नामधारी दरबार  
श्री भैणी साहब (लुधियाना)



# श्री भैणी साहब

प्रीतमसिंह कवि

नामधारी दरबार  
श्री भैणी साहब (लुधियाना)

हिन्दी रूपांतरः  
प्रीतमसिंह पंछी

१६७८

प्रकाशकः

नामधारी दरवार

श्री भणी साहब, जिला लुधियाना

मुद्रकः

नवयुग प्रैस, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्यः एक रुपया

## दो शब्द

मेरे मित्र श्री प्रीतमसिंह कवि ने “भैणी साहब” नाम की यह छोटी सी पुस्तिका लिखकर अति संक्षेप में नामधारी सम्प्रदाय तथा सतिगुर्जुओं के सम्बन्ध में तथ्यपूर्ण जानकारी दी है। श्री भैणी साहब सतिगुरु रामसिंह तथा नामधारियों के संबंध में जितना लिखा जाना चाहिए था, उतना नहीं लिखा गया, किन्तु फिर भी इस बात का संतोष है कि आजकल कुछ काम हो रहा है।

जो विद्वान् लेखक नामधारियों के मंबंध में लिखते हैं, उनके लिये ऐसे ठोस तथा तथ्यपूर्ण सामग्री की आवश्यकता थी जो संक्षेप में होते हुये भी अपने भीतर विशाल ऐतिहासिक प्रेरणा छिपाए वैठी हो।

श्री कवि जी की यह छोटी ती पुस्तिका सही ढंग से इस आवश्यकता को पूरा करती है। इसका प्रथम संस्करण अप्रैल, १९६६ को प्रकाशित हुआ था। प्रसन्नता की बात है कि पाठकों ने इसे सराहा।

अब इसका द्वितीय संस्करण नामधारी दरवार की ओर से प्रकाशित हो रहा है। आशा है इसका स्वागत होगा।

फरवरी २१, १९७८

—ग्रमर भारती



## श्री भैणी साहिब

यह वेद काल के अगस्त मुनि का आश्रम था ।  
इसे देखकर मैं निश्चय नहीं कर पाया कि यह  
एकांत स्थान जिस पर एक वैदिक निशा सौंदर्य  
उत्तरा हुआ है, वीसवीं सदी के पंजाब के किसी  
गांव में भी पाया जा सकता है ।

—के. एम. मुन्द्री

श्री भैणी साहिब जाकर मेरा मन इतना प्रसन्न  
हुआ कि वहां से आने को दिल नहीं किया ।

—डा० गोकुल चंद नारंग

प्राचीन देश भारत के, एक गौरवमय प्रदेश पंजाब में जिला  
लुधियाना का एक छोटा-सा गांव स्वयं में एक महानता संजोए बैठा है  
जिसकी चर्चा इतिहास के विश्लेषन के साथ और उजागर होती चली  
जा रही है ।

लुधियाना चण्डीगढ़ सड़क के पन्द्रहवें मील से पृथक होता सड़क का  
एक छोटा टुकड़ा डेढ़ मील उत्तर-पश्चिम की ओर ले जाते हुए, हमें  
एक ऐसी सादी किन्तु ऐतिहासिक नगरी की ओर ले जाता है जो घने,  
हरे-भरे वृक्षों की ओट में स्वयं को छिपाए बैठा है । इस नगरी को

देखते ही मन को शांति, आँखों को ठंडक तथा आत्मा को मुक्ति प्राप्त होती है। यही मैणी साहब है।

देखने में इस छोटे-से साधारण गांव ने अपनी सवा सदी की आयु में भारत में घटी महान् घटनाओं को गहराई से पहचाना और उनसे प्रेरणा लेकर अपने अनुयाईयों को नये मार्ग पर अग्रसर किया।

आज यहां हर वर्ष, आधे अगस्त से दस सितम्बर तक महान् यज्ञ और तप प्रयोग होते हैं। सैंहड़ों हजारों लोग इस नगरी के दर्शनार्थ आते हैं। कुछ दिन भगवान् के चरणों में मग्न होकर नाम वाणी व कीर्तन का लाभ लेते हुये धरों को लौटते हैं। किन्तु उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक इसका नाम तक कोई नहीं जानता था।

जब भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह धधक रहा था, तब मैणी साहब में अहिंसक संघर्ष का विगुल विदेशी सरकार के विरुद्ध बजाया गया। शासकों का एक ऐसा संघर्ष जो नैतिकता तथा धार्मिक आधारशिला पर खड़ा किया जाना था। जहां गोला वारुद के स्थान पर ऊन की माला ने काम करना था।

श्री मैणी साहब में १३ अप्रैल, १८५७ को सतिगुरु रामसिंह ने सफेद झण्डा फहरा कर अपने अनुयाईयों को नये अमृत की पाहुल देकर शारीरिक, व्यवहारिक तथा आचरण की शुद्धता के बीज आरोपित किए। सादगी, सौहार्द, सेवा, सच्चाई और सरलता पर बल देकर गिरावट की ओर जा रहे लोगों को उबारा और उनमें एक जवरदस्त प्रेरणा फूंक दी।

भक्ति भरे हृदय में से उठी सत्य, अहिंसा पर आधारित ऐसे मौन राजनीतिक आंह्वान को पंजाब की जनता ने बहुत ही गम्भीरता से लिया। आगामी पाँच सात वर्षों में ही यह लघु-नगरी समस्त भारत

जीती-जागती शक्ति का केन्द्र बन गयी। पंजाब में इस नगरी की आवाज ने स्वतंत्रता की एक धड़कन पैदा कर दी।

पंजाब में से खालसा राज को खत्म हुये अभी आठ वर्ष ही हुये थे कि भैणी साहब में से पुनः स्वतंत्र राज की स्थापना की हुंकार उठने लगी। वर्ष भर में ऐसे जागरूक लोगों के दो चार विशाल उत्सव हो जाते जो भीतर ही भीतर अंग्रेज की पराधीनता के विरुद्ध आग उगलते।

किन्तु दुर्भाग्य से, इसी भैणी साहब ने नये युग के प्रारम्भ के पन्द्रहवें वर्ष पश्चात ही वह दुर्दिन देखे कि आज उन्हें याद करके इस धरती का कण-कण गीला हो जाता है। अंग्रेज पुलिस के घोड़े उसके कोने-कोने को रौंदने लगे। पवित्र स्थान के आँगन तक खुदवाये गये। श्रद्धालु तथा अन्य लोगों को यहाँ आने से रोका गया। पुलिस चौकी बैठा दी गयी। गुरुद्वारे के दर्शनों को तरसते लोगों को पाँच-पाँच के ग्रुपों में भी भीतर जाने से रोका गया। यहाँ पूजा पाठ करने और करवाने वालों का पता चलने पर जेल की हवा खानी पड़ती। भैणी साहब से सम्बंधित हरेक व्यक्ति को अपने थाने के रजिस्टरों में नाम दर्ज करा कर प्रतिदिन हाजिरी के लिये बाध्य किया जाता था।

विकास कर रहे भैणी साहब को इन सख्तियों का सामना इसलिए करना पड़ा कि यहाँ की शिक्षा से, अपने ही अर्थ लगाकर, कुछ कुकों ने अमृतसर, रायकोट, मलेर, कोटला आदि में वूचड़ खानों पर सशस्त्र आक्रमण करके गायों के रस्से खोल दिये और विरोध करने वालों को मौत के घाट उतार दिया।

यद्यपि गो-गरीब की रक्षा श्री भैणी साहब के वातावरण की ही उपज थी, किन्तु उसके लिए अभी यह समय उचित नहीं था।

अंग्रेज शासकों ने ऐसे भावना-भरे बलिदानी कुकों को फांसी पर लटकाया। काले पानी भेजा और दिन के प्रकाश में तोपों के आगे खड़ा

करके उड़ा दिया। अंग्रेज इस प्रकार लोगों में आजादी के लिये पैदा हो रही तड़प को कुचलना चाहता था।

१८ जनवरी, १८७२ की एक सवेर को श्री भैणी साहब का नाम रोशन करने वाले, महान नेता सतिगुरु रामसिंह को बगैर दोष बताये निर्वासित कर दिया गया।

किन्तु जैसे शांत पानी में फेंका हुआ एक कंकर कुछ लहरें पैदा करके फिर प्रभावहीन हो जाता है वैसे ही भैणी साहब ने इन यंत्रणाओं के बाद सतिगुरु हरिसिंह तक सतिगुरु प्रतापसिंह के धार्मिक तथा देश भक्ति के कार्यों को पहले से भी अधिक शांति के साथ सम्पन्न किया और देखा कि जिस ढंग की प्रथम आवाज सतिगुरु रामसिंह द्वारा उसके दिल से उठी, उसी ढंग की आवाज वो ऊँचा करके महात्मा गांधी ने सारे देश को नई परिस्थितियों के अधीन लामबंद किया और सन् १९४७ में, यद्यपि देश का विभाजन मानकर ही स्वतंत्रता के तट पर लाया गया।

श्री भैणी साहब स्वतंत्र भारत में अभी वह राजनीतिक सम्मान प्राप्त नहीं कर सका जिसका वह अधिकारी है। आज भी यह नगरी देश को पहले की भाँति ही नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में ढालने के लिये प्रेरणा दे रही है।

राजनीतिक पृष्ठ भूसि के अतिरिक्त इस नगरी का एक और उज्ज्वल रूप भी है वह है सिख धर्म की महान परम्पराओं को जीवित रखना।

भैणी साहब कच्चे और पक्के कोठों का समूह है। गुरुद्वारे में बगैर किसी समय की पावंदी के १८५७ से भण्डारा (लंगर) जारी है। एक सतिगुरु रामसिंह का ध्यान मंदिर है। एक गुरु हरिसिंह का चौबारा है जहां वह नजरबन्दी के दौरान भक्ति में तल्लीन रहे। सतिगुरुओं का वह घर तथा दुकान है जहां वह स्वयं बाहर से आये लोगों की सेवा करते करवाते रहे। यहां आज भी जरूरतमंदों को निःशुल्क भोजन

सामग्री दी जाती है। गुरु रामसिंह जी के समय की एक लौह और लंगर है जिसमें नलके का पानी पीने वालों पर रोक है।

गांव के दक्षिण में बाहर “अकाल वुंगा” नाम की एक कुटिया है जिसमें गुरु रामसिंह जी प्रतिदिन कुछ घंटे वंदगी किया करते थे।

भैणी साहब के पहाड़ की ओर फलांग भर के फासले पर श्री रामदास पुर नाम का एक धार्मिक स्थान है। इसमें वर्तमान सतिगुरु जी का एक सादा सा निवास है। एक छोटा सा वहुमूल्य पौधों का बाग है। इसमें एक तीन कमरे की आधी कच्ची आधी पक्की ईटों की कोठी में सन् १६५६ से निरन्तर नाम सिमरन जारी है। फूलों भरे इस वातावरण में मनुष्य की वृत्ति स्वयं ही प्रभु चरणों के संग जा जुड़ती है। यहां एक गमसर नाम का तालाब भी है। साथ ही वृक्षों के समूह के नीचे वैदिक काल के ऋषियों जैसे बुजुर्गों की कुटिया भी है। यहां से पहाड़ की तरफ एक और कमरा है जिसमें लगभग ४० वर्ष से निरन्तर नाम सिमरन हो रहा है।

सुदूर देशों में श्री भैणी साहब की महिमा को पहुंचाने वाले सतिगुरु रामसिंह के पौत्र, रामधारी पंथ के वर्तमान सतिगुरु सतिगुरु जगजीत सिंह जी हैं जिनके दर्शनों और वचनों में से वही पाप विनाश की निर्मल गंगा की धार वह निकलती है जिसका आधार प्रथम गुरु नानक देव जी हैं।

## नामधारी

“उनका आंदोलन यहां नितांत धार्मिक था वहां  
उतना ही राजनीतिक भी था।”

— भाई परमानंद

नामधारी पंथ की अध्यारशिला सतिगुरु रामसिंह जी ने सन् १८५७, १३ अप्रैल को रखी। उद्देश्य था सिख जगत में आ गयी नैतिक, सामाजिक और आत्मिक कमजोरियों को दूर करना। गुरु रामसिंह जी को इस समय तक गुरु गोविन्द सिंह जी के, सही अर्थों में, केवल ढाई सिख ही मिले। साधारणतः सिखी ग्रन्थ साहब में वर्णित शिक्षा से विपरीत आचरण की हो गयी थी। मांस, शराब, शिकार और व्यभिचार आदि की प्रवृत्ति ने धर्म भावना को तो नष्ट ही कर दिया था। राजनीतिक तौर पर भी पंजाबी और विशेषकर सिख दीवालिया हो गये थे। महाराजा रणजीत सिंह के निधन के बाद जिस अराजकता का शिकार पंजाब का खालसा राज हुआ, वह दिन-व-दिन सिख आचरण के पतन का विशेष नमूना था। सिख सतलुज नदी तक पहुंचे किन्तु ब्रिटिश राज की कुट्टनीति को न समझकर १८४६ ई० में पूर्ण रूप से उसके अधीन हो गये।

किन्तु अभी भी कुछ व्यक्ति अंग्रेज की पराधीनता को बहुत ही घृणा करते थे इनके शिरोमणि थे। सतिगुरु रामसिंह जी। आपने खण्डे का अमृत छका कर श्री मैणी साहब में एक ऐसे संत खालसा को जन्म

दिया जिसका नाम रखा—नामधारी। ईश्वर के नाम को आधार मानने वाला।

नामधारियों के लिये सतिगुरु जी ने धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक नियम तैयार किये—

### धार्मिक :

१. एक परमात्मा में अटूट विश्वास।
२. गुरुवाणी द्वारा स्पष्ट किये धर्म आचार को जीवन में ढालना।
३. क्षमा, त्याग, सत्य, दया, प्रेम, सेवा और वंदगी आदि के साथ सम्बद्ध रहना।
४. मांस, शराब, जीव हत्या, चोरी, यारी ठगी तथा सूद से परहेज।

### राजनीतिक :

१. अंग्रेजों के स्कूलों और शिक्षा का बहिष्कार।
२. अंग्रेज की कचहरियों में नहीं जाना।
३. अंग्रेज की डाक सेवा और रेल का प्रयोग नहीं करना।
४. विदेशी वस्त्रों से परहेज।
५. विदेशियों की नौकरी नहीं करनी।
६. अंग्रेजी शासन से मुक्ति के सजग, खामोश और अहिंसक प्रयत्न।

### सामाजिक :

१. सफेद वस्त्र पहनने। (नयी किस्म की कट के वस्त्र)
२. सुबह जागना, शौचालय जाकर दातुन करना, केशों सहित स्नान। भजन करना, वाणी पढ़ना।

३. हर प्रकार से आत्म-निर्भर ।
४. गड़वा (लोटा), डोरी (रस्सी), आसन, पऊए और माला हमेशा अपने पास रखने ।
५. जन्म-मरण, विवाह-शादियों को सादा और सामाजिक नियमानुसार करना ।

६. गो-गरीब की रक्षा करनी ।

७. हरेक नामधारी को अपना भाई और वहन समझना ।

इन नियमों के समाज में प्रचलित हो जाने से पंजाब के लोगों को एक नई शक्ति और संगठनात्मक चेतना मिली । इससे प्रत्येक के अन्दर एक ऐसी ज्वाला धधकने लगी जिसका उद्देश्य राजनीतिक तौर पर आजादी और धार्मिक रूप से समानता प्राप्त करना था ।

चार-पांच वर्ष के अल्प समय में नामधारियों की संख्या सात लाख तक पहुंच गयी । जब पंजाब में 'जुग-जुग राज सवाया टोपी वाले का' के धृणित स्वर मंदिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में से उठ रहे थे, तब नामधारी समाज ही ऐसा था जो गोरी सरकार के विरुद्ध गुप्त धृणा संगठित कर रहा था ।

नामधारी भजन वाणी करते । जब कहीं अपने सतसंग में आत्मिक आनन्द से सरावोर हो कूक उठते तो सुनने वाले लोगों ने इनका नाम ही कूके रख दिया । अंग्रेजों की दस्ताविजों में भी नामधारियों को "कूका" नाम से स्मरण किया गया है ।

## आजादी के लिए संघर्ष का नया तरीका

“गुरु रामसिंह जी की फहराई आजादी की छवजा के नीचे नामधारियों ने जो वलिदान किये हैं, उन पर देश को सदा गर्व है।”

—सुभाष चन्द्र बोस

दूरदेश सतिगुरु रामसिंह को यह भली भाँति ज्ञात था कि देश की विखरी और चरित्रहीन शक्तियाँ स्थान-स्थान पर अंग्रेजों से पराजित होंगी और वह नई प्रकार के हथियारों से लैस संगठित सैन्य शक्ति और धोखे की नीति के साथ भारतीयों का शोषण करेंगी। इसलिये वह धर्म, आत्म संयम और असहयोग के तरीकों को सामने लाये। निस्संदेह यदि उस समय साधारण लोग इस तरीके को अपना लेते तो पौनी सदी पहले ही अंग्रेजों से स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकती थी, क्योंकि आज की आजादी भी उन्हीं तौर-तरीकों और अहिंसक दांव पेच से प्राप्त की जा सकती है।

जागृति और आत्म विश्वास वाला ठोस संगठन ही कूर से कूर शासक से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यह भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् भी स्वतंत्र हो रहे देशों के संघर्षों से जाना जा सकता है।

सतिगुरु रामसिंह जी की जगायी ज्योति और प्रदान किये आत्मिक

बल का ही यह चमत्कार था कि मलेर कोटले के रक्कड़ में ६६ नामधारियों ने स्वयं को तोपों के आगे खड़ा कर दिया और उन्हें तोप से उड़ा दिया गया। इसी भावना का परिणाम था कि शहीदी जत्थे के नेता स० हीरा सिंह ने अहंकारी अंग्रेज अधिकारी को चुनौती दी—

“विल्ले (अंग्रेज के लिये) एक बार नहीं, कई जन्म लेकर भी तुम्हारी पराधीनता से मुक्ति प्राप्त करने के लिये लड़ते रहेंगे।”

१८७२ का वर्ष ध्यान में बैठाकर यदि नामधारियों की थोक शहीदियों को आँका जाए तो पता चल सकता है कि नामधारियों की उस लड़ाई का क्या उद्देश्य और क्या महानता थी। अंग्रेज ने सन् १८५७ का विद्रोह पूरी तरह से कुचल कर भारतीय जनता पर अपने आतंक की धाक जमा दी थी। विदेशी शासकों के विरुद्ध बोलने का किसी राजा महाराजा, नवाब या जगीरदार सरदार को साहस नहीं था। इसके विपरीत उन्होंने इस पराधीनता को हँसकर स्वीकार कर लिया था। इस समय गुरु रामसिंह ने जन साधारण को आत्मिक शक्ति से भरपूर कर दिया और वह पराधीनता के जीवन से बार-बार मर कर आजादी के लिये लड़ने को अपना जीवन आदर्श समझने लगा।

सन् १८५७ में मिली सहायता से अंग्रेज पंजाब को अपने पराधीन एक विश्वसनीय देश समझता था किन्तु जब इसे सुलगती स्वतन्त्रता की आग का ताप लगा तो वह अपने दिखावे के कानून का भी निवाह न कर सका। वगैर मुकदमा चलाये, दोष सावित किये—६६ नामधारियों को मलेर कोटला में तोपों से उड़ा दिया। इस काम में देशी राजे रजवाड़ों ने उनका पूरा साथ दिया।

विदेशियों का हरेक बार सहन करते हुए नामधारी अ.ज भी जीवित

हैं। देश स्वतन्त्र है। अंग्रेज चले गये हैं। कहानियां शेष हैं। किन्तु कहानियों में से जब भी कोई वलिदानी नामधरियों की गाथा पढ़े सुनेगा तो वह अवश्य इस बात को अनुभव करेगा कि अंग्रेजों के पंजे से मुक्ति के लिये गुरु रामसिंह जी ने जो मनोबल और आत्मविश्वास दिया, वही आगे चलकर सारे राजनीतिक आंदोलन का आधार बना।

## नामधारियों की नैतिक नोति

“बहुत से लोगों की काया पलट हो गयी और हजारों सिख उनके पीछे चलते हुये सच्चे नामधारी बने। पहले का आराम और दरिद्र का जीवन छोड़ दिया। शुद्ध आचरण, सादा पहरावा, पवित्र आहार करके नाम सिमरन और धर्म की रक्षा के लिये तत्पर हो गये।”

—गुरमुख निहालसिंह

श्री सतिगुरु रामसिंह जी ने यह भली-भाँति भांप लिया कि अंग्रेज भारतीय सभ्यता और इसकी विचारधारा को नकार कर लोगों में यह भ्रम पैदा कर रहा है कि भारत की संस्कृति और जीवन का तौरन्तरीका खोखला है, वास्तव जीवन का ढंग यूरोप से ही सीखा जा सकता है। हमारी तरफ देखो हम संख्या में थोड़े से, इतनी बड़ी जनसंख्या पर नियंत्रण कर रहे हैं।

ऐसा समय आ गया है कि शिक्षित लोग अंग्रेजों के विचारों से प्रभावित होकर अपनी संस्कृति और रीति-रिवाज की निन्दा करने लग गये। अंग्रेज ने हिन्दू-मुसलमानों में तो फूट के बीज वो ही दिये थे, सिखों तथा हिन्दुओं के बीच भी घृणा फैलानी आरम्भ कर दी।

पूर्वी संस्कृति को निन्दनीय बताकर ईसाइत के साथ पश्चिमी रंग-दंग से उत्साहित करना तथा उसका प्रसारण आरम्भ कर दिया ।

सतिगुरु रामसिंह जी ने इस गंभीर पड़यंत्र को दृष्टि में रखते हुये अंग्रेजी शिक्षा, स्कूल, अदालतों तथा अन्य सुविधाओं के बहिष्कार करने का कार्यक्रम बनाया जिस पर सभी नामधारियों ने भगवान का वाक्य मानकर फूल चढ़ाये । यह निर्विवाद सत्य है कि महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के समय भी नामधारियों की भाँति ठोस बहिष्कार नहीं किया गया ।

सतिगुरु रामसिंह जी ने भारतीयों के पतन का मूल कारण धर्म से विमुखता तथा अन्धविश्वास ही समझा । पुनः धर्म लाने की पृष्ठभूमि तैयार करके उन्होंने देश को स्वतंत्रता की ओर बढ़ने का आधार दिया । नामधारियों में उन्होंने स्वदेशी के प्रचार के साथ, अपनी दक्षियानूसी तथा खर्चीली रस्मों को खत्म करने की ओर भी ध्यान दिया । हिन्दू संस्कृति की श्रेष्ठता को पुनः उजागर किया । अंतर केवल वेद मंत्रों के स्थान पर समझ में आ सकने वाली गुरुवाणी का ही था । उनके दर्शन, व्यवहार और शिष्टाचार का प्रभाव ऐसा पड़ा कि पंजाब के गांब-गांब, नगर-नगर में कीर्तन, भजन, पाठ, पवित्रता तथा संयम का वातावरण पैदा हो गया ।

उन्होंने स्त्री जाति पर महान उपकार करते हुये यह चीजें धर्म के अधीन कर दीं कि कोई लड़की को नहीं मारे, छोटी आयु में लड़की का विवाह न करे, तबादला न करे, मोल न ले, विधवा विवाह किया जाये, लड़के तथा लड़की को धार्मिक शिक्षा अवश्य दी जाये । कच्छे पहनाकर अमृत छकाकर सतिगुरु रामसिंह जी ने स्त्री को समानता प्रदान कर दी ।

मढ़ी पूजा, कब्रि पूजा तथा अंधविश्वास की आम बुराईयों को नामधारियों ने त्याग दिया तथा विशुद्ध भारतीय संस्कृति को ग्रहण कर लिया। इस सच्चे प्रचार का पंजाव के लोगों ने खुलकर स्वागत किया। नामधारी पंजाव में सच्चाई, ईमानदारी तथा अन्य विशिष्ट गुणों का प्रतीक बन गया।

नामधारियों के इन सद्गुणों का ही प्रभाव था कि सन् १९७२ तक हिन्दू-मुसलमान तथा सिखों की भारी वहुसंख्या नामधारियों की ओर प्रभावित होने लगी।

नामधारियों की नई शादी-विवाह रीति से कुछ दकियानूसी व्राह्यणों को कष्ट हुआ किन्तु सम्पूर्ण समाज ने सतिगुरु रामसिंह जी के इस उपकार को स्वीकार किया। सिखों ने १९०६ में आनंद मैरिज एकट पास करवाकर उस प्राथमिकता के आगे शीश निवाया।

इस प्रकार भारतीय समाज के समस्त अंगों पर सतिगुरु रामसिंह जी के बनाए मार्ग पर चलकर, नामधारियों ने एक ठोस प्रभाव छोड़ा। आज भी नामधारियों का जीवन आचरण देखकर इतनी पूर्ण शुद्धता तथा स्वदेशी के प्रति प्रेम पर हर कोई गौरव अनुभव कर सकता है।

## सतिगुरु रामसिंह जी

“कांग्रेस ने आपके बताये हुये मार्ग पर चलकर ही अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की ।”

—जवाहरलाल नेहरू

‘यह ठीक है कि अपने पैरों पर खड़े होने की शिक्षा देश ने असहयोग के प्रवर्त्तक गुरु रामसिंह जी से प्राप्त की है ।

—छब्बीलदास प्रिसिपल

नामधारी सतिगुरु रामसिंह जी को गुरुनानक देव जो के चलाये सत्य मार्ग का वारहवाँ पथ-प्रदर्शक मानते हैं, गुरु वालक सिंह जी हजरो निवासी को सिखों का ग्यारहवाँ गुरु और गुरु रामसिंह को वारहवाँ माना जाता है ।

आपका जन्म सन् १८१६, ३ फरवरी वसंत पंचमी के दिन गांव राईयां जिला लुधियाना में हुआ । आपके पिता का नाम जस्सा सिंह और माता का नाम सदा कौर था । यह रामगढ़िया विरादरी के रत्न थे ।

आपका विवाह गांव धरोड़ जिला लुधियाना में श्री जस्सा जी के

साथ हुआ। संतान दो लड़कियां-बीबी नन्दा और बीबी दया कौर थीं।

सन् १८३५ से १८४५ तक आपने महाराजा रणजीत सिंह की नौनिहाल सिंह रजमेंट में नौकरी की। सेना में रहते हुये इन्होंने १८४१ ई० में गुरु बालक सिंह जी के पास पहुँच कर उनसे गुरु-मंत्र लिया।

सन् १८५७ को अप्रैल की १३ तारीख को विधिवत पंच प्यारों की स्थापना करके गुरु गोविन्द सिंह जी की सिखी का पुनरोत्थान किया जिसका नाम नामधारी रखा।

सन् १८६३ को गांव सियाहड़ जिला लुधियाना में प्रथम बार आप ने स्त्री जाति को अमृत छका कर पुरुषों के समान दर्जा दिया। ३ जून १८६३ को आनन्द मर्यादा का गांव खोटे जिला फिरोजपुर में छः जोड़ों को ग्रंथ साहब से लावें पढ़ाकर गृहस्थ मार्ग में प्रविष्ट करवाया।

३, जुलाई १८६६ से १८३६ तक आपको भैणी साहब में (भैणी साहब को पहले भैणी मूँदड़ के नाम से जाना जाता था और यह गांव राईयां का ही लगभग आधा मील दूर वसा हुआ भाग है) नजरबन्द किया गया। इस दौरान सतिगुरु रामसिंह जी ने गुरुवाणी के प्रचार हेतु, प्रथम बार दीवान बूटासिंह के आफताव प्रेस लाहौर से भी आदि ग्रन्थ साहब छपवाया। इससे पूर्व हस्त-लिखित बीड़ें ही प्रचलित थीं।

1—(१४-१५ जून १८७१ की बीच की रात को नामधारियों की तरफ से अमृतसर के गो-घातक बूचड़ों पर हमला। १५ सितंबर १८७१ को ४ व्यक्तियों को फांसी और तीन को कालेपानी का दण्ड दिया गया। तीन फरार घोषित किये गये।)

2—(१५ जुलाई १८७१ की रात को रायकोट जिला लुधियाना पर हमला कर गायों के रस्से खोल दिये। विरोध करने वाले कुछ बूचड़

मारे गये। ५ अगस्त, १८७१ को वस्तियों की कोठी जिला लुधियाना में ३ नामधारी फांसी लटका दिये गये। दो निर्दोष नामधारियों को इसी में २६ नवम्बर, १८७१ को लुधियाना जेल में फांसी पर झुला दिया गया।

३—१५ जनवरी १८७२ को नामधारियों का मलेर कोटला में बूचड़ों पर हमला। वगैर मुकद्दमा चलाये यहां के रक्कड़ में १७-१८ जनवरी १८७२ को ६६ नामधारी तोपों से उड़ा दिये गये।

१८ जनवरी १८७२ को सतिगुरु रामसिंह जी, उनका एक सेवक और तीन प्रमुख सूबों को श्री भैणी साहब से गिरफ्तार करके इलाहाबाद के किले में नजरवंद किया गया। इसी दिन संध्याकाल तक और प्रमुख सूबों को भी गिरफ्तार करके इलाहाबाद के किले में भेज दिया गया।

१६ मार्च, १८७२ को सतिगुरु जी को रंगून सेंट्रल जेल में स्थानांतरित कर दिया गया।

दिसंबर, १८८५ के दिन सतिगुरु जी पहरेदारों की हिरासत में से निकल कर अंतर्धान हो गये।

## सतिगुरु हरिसिंह जी

आप सतिगुरु रामसिंह के छोटे भाई थे। आपकी गद्दी-नशीनी-गुरु रामसिंह के परदेस में से लिखे एक हुक्मनामे द्वारा हुई, किन्तु इस से पहले भी गुरु जी ने देश में रहते हुए अपने छोटे भाई से खेतीवाड़ी का काम छुड़वा कर डेरे की कुछ जिम्मेदारियाँ सौंप दी थीं। परदेस गमन के समय सतिगुरु जी बुधसिंह जी को (यह नाम उनका पहला था और बाद में गुरु हरिसिंह हुए) अपने बाद गुरुद्वारा श्री मैणी साहब की सभी दायित्व देकर विदा हुए।

गुरु हरिसिंह को गुरु रामसिंह जी के बाद अंग्रेज सरकार की ओर से ढहाये गये सभी अत्याचारों का सामना करना पड़ा। उनके समय मैणी साहब में जमीन खोदकर हथियार ढूँढ़ने का असफल प्रयास किया गया। आपके समय ही मैणी साहब में पुलिस की चौकी बैठाई गयी और नामधारी सिखों का यहाँ पर आना जाना रोका गया। धार्मिक नित्यकर्म पाबंदी का शिकार हुए तथा अनेक प्रकार के अत्याचारों का दौर जारी रखा गया। सतिगुरु हरिसिंह ने सभी कठिनाईयों को हँसते हुये भेला।

ऐसी स्थिति में आपके महल (पत्नी के लिये सम्मान सूचित शब्द) श्री माता जीवन कौर तथा फतह कौर को भी कई राजनीतिक ज्यादतियों का सामना करना पड़ा। माता जीवन कौर के ज्येष्ठ सपुत्र सतिगुरु प्रताप सिंह का जन्म भी नजरबन्दी में ही हुआ।

हर प्रकार के सरकारी प्रतिवंधों के बावजूद गुरु हरिसिंह जी ने नामधारियों में जीवन शक्ति का संचार जारी रखा। आजादी की तड़फ जारी रखी। सिखी मर्यादा को सुर्जीत रखा। उसके साथ हो गुप्त रूप से कशमीर, नेपाल और रूस जैसी पड़ौसी सरकारों के साथ तालमेल बनावे रखने के प्रयत्न किये। आपने धार्मिक रीतियों का पालन करते हुये, सिर झुकाये, हृदय बो सागर की भाँति विशाल और विश्वास को हिमालय की भाँति ऊँचा रख कर अपना समय देश तथा धर्म की भलाई की बात सोचते हुए बिताया।

आपके सम्बन्ध में घरेलू जानकारी इस प्रकार है :

जन्म स्थान—राईयां, जिला लुधियाना।

माता पिता—माता सदा कौर, पिता बाबा जस्सासिंह।

जन्म—१८१६ ई० (आश्वन का तीसरा नौराता—बुधवार सम्वत् १८७६)

पहली पत्नी—बीबी साहबो।

दूसरी पत्नियाँ—माता जीवन कौर, माता फतह कौर।

धार्मिक दायित्व—१८ जनवरी, १८७२।

संतान—(१) सतिगुरु प्रतार्पसिंह।

(२) महाराज निहालसिंह।

(३) महाराज गुरदयाल सिंह।

देहावसान—१६०६ (सम्वत् १६६३)

## सतिगुरु प्रतापसिंह जी

सत्रह वर्ष की किशोरावस्था में, गुरु हरि सिंह के देहावसान के बाद नामधारी पंथ का दायित्व अपने कंधों पर लिया। आपके जन्म के समय से ही गुरुद्वारा पर से बहुत से प्रतिवंध उठा लिये गये। आपने नामधारियों की संगठित शक्ति को देश की स्वतन्त्रता के आंदोलन कांग्रेस के साथ लामवंद करके संघर्ष में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। नामधारियों को धार्मिक क्षेत्र में अपना दायित्व निभाते हुये आपने हिन्दू, सिखों, मुसलमानों की एकता पर बल देने के लिये सम्मेलन किये। हिन्दू तथा सिखों की एकता के जिये हमेशा प्रयास जारी रखे। गुरु नानक पंथी समस्त सम्प्रदायों की एकता हेतु प्रयत्न किये। संगीत से आपका विशेष प्रेम था। इस क्षेत्र में आपके किये प्रयत्न अद्वितीय थे। भारत के विभाजन समय आपने सभी बुद्धिमान लोगों और नामधारियों को भारत चले आने का आह्वान किया। देश-विभाजन के समय भयंकर बर्बादी में समूचे नामधारियों को भारत में स्थान-स्थान पर वसाने तथा जिला हिसार, तहसील सिरसा (अब जिला) — जीवन नगर क्षेत्र में एक स्थान पर वसाने का विशेषकर कठिन तथा खर्चीला कार्य भार अपने कंधों पर लेकर इसमें सफलता प्राप्त की।

आप केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे वरन् देश के पशु धन की उन्नति तक रक्षा के प्रयत्नों में भी बढ़ चढ़ कर भाग लेते रहे। अपना

पशु फार्म खोलकर बढ़िया नस्ल के पशु पैदा किये तथा पशु प्रदर्शनियों में भाग लेकर सरकार को सही सुझाव दिये कि कैसे अल्प व्यय में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है। इन्होंने अपने पास से खर्च करके प्रत्येक वर्ष एक-एक या दो-दो पशु प्रदर्शनियाँ जिला लुधियाना तथा हिसार में कीं ताकि लोगों में बढ़िया नस्ल के पशु रखने का शैक बढ़े।

धार्मिक पक्ष से आपने पौने चार लाख आदि ग्रन्थ साहब के पाठ करवाये तथा अलग-अलग स्थानों तथा लोगों से लाखों पाठ करवाये। भजन वाणी तथा यज्ञ हवन का प्रवाह हमेशा जारी रखा।

देश की उन्नति को सामने रखते हुये नामधारियों तथा अपनी धन-राशि से हिसार के जिला में पांच सौ मुख्बा वे-आवाद भूमि खरीदकर उसे आवाद कर दिया।

आपने हमेशा स्वदेशी सरकार का तो साथ दिया, पर मांग केवल यह की कि देशवासियों की भलाई के लिये गो-वध पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। आपने जीवन भर जरूरतमंद लोगों की भरपूर सहायता की।

यह गौरव केवल सतिगुरु प्रतापसिंह जी को प्राप्त हुआ कि आपके अंतिम यात्रा के समय हजारों पाठों भोग पड़े तथा विभिन्न विचारों के लोगों ने जमा होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

जन्म—१८८६ ई० (सम्वत् १८४६)

माता पिता—माता जीवनकीर, पिता गुरु हरिसिंह।

स्थान—श्री भैणी साहब

गुरुगढ़ी—१६०६ ई०

आनंद कारज—१६१५ ई०

पत्नी—माता भूपेन्द्र कौर ।

संतान—सतिगुरु जगजीत सिंह ।

महाराज वीर सिंह ।

देहावसान—२२ अगस्त, १६५६ ई० ।

## सतिगुरु जगजीत सिंह जी

आप सतिगुरु प्रतापसिंह जी के प्रथम सपुत्र हैं। आपने लगभग ३६ साल सिख बन कर भी सतिगुरु जी की आज्ञाओं का पालन किया तथा गुरु घर की कठिन मर्यादा की कठिन स्थितियों में रहकर स्वयं को कुंदन बना लिया।

यद्धपि आप सतिगुरु प्रताप सिंह जी के देहावसान के पश्चात उसी क्षण “सतिगुरु” के दायित्व के निवाहने के लिए वाध्य थे मगर नामधारी संगतों तथा देश विदेश से आये विभिन्न विचार रखने वाले लोगों के डेढ़ लाख के हजूम ने १० सितम्बर, १९५६ को आपके आगे एक खादी की पगड़ी तथा धन-राशि रख कर आपके गुरुत्व का सम्मान किया।

सतिगुरु जगजीत सिंह जी ने नामधारियों का नेतृत्व उन्हीं सिद्धांतों पर करना आरम्भ किया जिनका प्रारम्भ गुरु नानक देव कर गये थे और समय के अनुसार जिनका विकास तथा परिवर्तन अन्य सतिगुरुओं व सतिगुरु प्रतापसिंह जी ने किया।

धर्म के पक्ष से—आप पहले की भाँति ही प्रतिदिन प्रातः काल से भजन वाणी आदि धर्म कार्यों में अपना समय विताते हैं। देश के समस्त प्रदेशों तथा विदेशों में संसार के कल्याण के लिये भ्रमण करते हैं। आप गो-रक्षा, पशु धन की उन्नति, विश्व शांति, विश्व धर्म समानता, विश्व शाकाहार आदि संस्थाओं में सक्रिय भाग लेते हैं।

श्री भैणी साहब आपका आवास है। श्री जीवन नगर जिला हिसार आपका नामधारियों की उन्नति के लिये केन्द्र है। आपके संरक्षण में जीवन नगर क्षेत्र के हजारों नामधारियों ने कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की है। सतिगुर जगजीत सिंह जी नामधारी शक्ति का प्रयोग देश की भलाई के लिये करने को हमेशा तत्पर रहते हैं।

आप मधुर भाषी तथा ऊँचे आचरण के धारणी हैं। वर्तमान समय गुरुसिखी, देशभक्ति तथा व्यक्ति के आचरण की उच्चता पर बल देते हुए विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

जन्म—१९२० ई०।

स्थान—श्री भैणी साहब।

माता पिता—माता भूपेन्द्र कौर, पिता सतिगुरु प्रतापसिंह।

पहली पत्नी—बीवी राजेन्द्र कौर (जिनका देहान्त हो गया)।

दूसरी पत्नी—माता चन्द्र कौर।

संतान—बीबा साहब कौर जी।

## वर्तमान नामधारी

श्री सतिगुरु जगजीत सिंह के नेतृत्व में आज के नामधारी उन्नति के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध असहयोग की नीति के स्थान पर भारत की स्वदेशी सरकार से सहयोग की नीति है। किन्तु सरकार की लोक व धर्म विरोधी नीतियों का विरोध आज भी किया जाता है।

नामधारी ग्रन्थ साहब में लिखित सिखी भावना को सुरजीत रखते हुये एक सतिगुरु की मान्यता के साथ उसकी आज्ञा में संगठित शक्ति है।

सफेद वस्त्र पहनते, केशों सहित स्नान करते हैं। भजन वाणी की ओर ध्यान रहता है। मांस, शराब से त्यागी तथा श्रेष्ठ प्रकार के वैष्णव हैं।

सत्य तथा स्वच्छता (मन और शरीर दीनों की) इनकी जीवन दिशा है। संगी-साथी-दोस्त-मित्र सभी अपने सेवा भाव तथा आस्था की भावना के कारण सम्मानित हैं।

नामधारियों की अपनी व्यक्तिगत-नीति कोई नहीं होती। इनकी नीति नामधारी दरवार निर्धारित करता है। राजनीतिक तौर पर छीना-झपटी की दौड़ में न पड़कर गुरु की आज्ञा के अधीन मेहनत-मजूरी करने में विश्वास करते हैं। साम्रादायिकता नाम की कोई चीज

इनमें नहीं है। हिन्दू अथवा सिखों के प्रेम भरे सहयोग हेतु हमेशा प्रयत्न-शील रहते हैं। इनके मंच पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन—सभी भाई-भाई हैं। यह पूर्ण अहिंसक है।

अपने विवाह स्वयं अपनी-आनन्द विधि से करते हैं। इनके विवाह सतिगुरु जी की हजूरी में अलग-अलग या सामूहिक होते हैं।

इनके वर्ष में दो बड़े मेले होते हैं—

१. होला-मुहल्ला—प्रत्येक वर्ष विभिन्न स्थानों पर सतिगुरु जी की मंजूरी से होता है।

२. प्रयोग मेला—यह लगभग प्रत्येक वर्ष श्री मैणी साहब में होता है तथा निरन्तर एक मास तक चलता है। इसकी समाप्ति १० सितम्बर को हो जाती है।

एक सच्चे नामधारी को मिलकर आत्मा प्रफुल्लित हो उठती है।

नामधारी आदर्श है—सबकी भलाई।.....



